जनपद रामपुर के क्षेत्रीय विकास में सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का जनसंख्यात्मक विश्लेषण

डॉ0 अरविन्द सिंह
असि0 प्रोफेसर (भूगोल विभाग)
श्री रतन सिंह(पी0जी0)कालेज पुवायॉ शाहजहॉपुर

मनुष्य अपनी प्राकृतिक परिस्थतियों की उपज है साथ ही भौगोलिक□तत्त्व,संसाधन और कारक के रूप में प्रकृति की सर्वाधिक मूल्यवान रचना है। वह प्राकृतिक संसाधनों का विकास और उपयोग कर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (वातावरण) का निर्माण करता है। वह संसाधन संसाधनकर्ता और संसाधन उपभोक्ता के रूप में कार्य करता है। सामान्यतः किसी राष्ट्र की वास्तविक सम्पदा उसमें निवास करने वाले स्वस्थ एवं प्रसन्नचित् पुरूषों, स्त्रियों एवं बच्चों में निहित है न कि उसके धरातल,जल,जंगल एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों में है क्योंकि उपर्युक्त कारक मानव उपयोग द्वारा ही संसाधनों के रूप में परिवर्तित होते है। अतः जनपद के क्षेत्रीय विकास में सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत मानव संसाधान एक महत्वपूर्ण कारक है। समाज में मानव न केवल संसाधन उपयोग के आर्थिक प्रारूप को निर्धारित करता है वरन् वह स्वयं भी एक आवश्यक गत्यात्मक संसाधन है। वह मानव और संसाधन के अन्यान्य क्रिया में विकास का अवस्था को निर्धारित करता है।

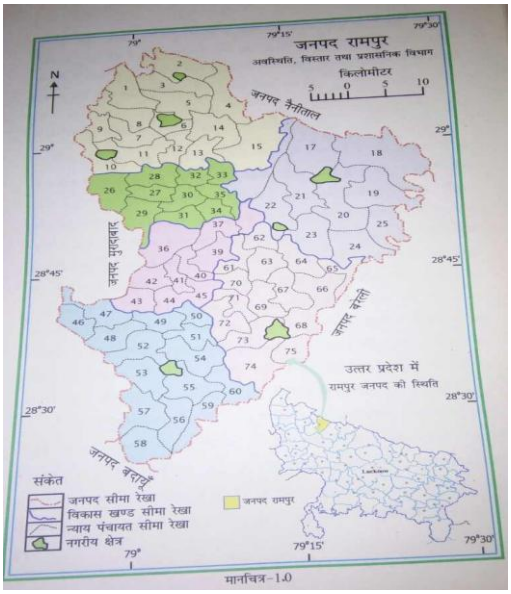
भूमण्डल पर जहाँ भी मानव संसाधन निवास है उसके महत्वपूर्ण योगदान के अनगिनत प्रमाण प्राप्त होते है–बस्तियाँ व नगर,भवन व अट्टालिकायें,पगडण्डियाँ व सड़कें, पुल व सुरंग,वर्कशाप व चिमनियों से उगलते विशाल कारखाने मानव के महत्वपूर्ण योगदान की विजय पताकायें ही है। आदिकाल से लेकर आज तक मानव उत्तरोत्तर अनेक आर्थिक सोपानों को पार करता हुआ वर्तमान स्थिति तक आ पहुँचा है। प्रत्येक राष्ट्र के आर्थिक उत्थान में मानवीय संसाधनों में सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है अतः अध्ययन क्षेत्र भी अपने आर्थिक विकास हेतु अछूता नहीं है।

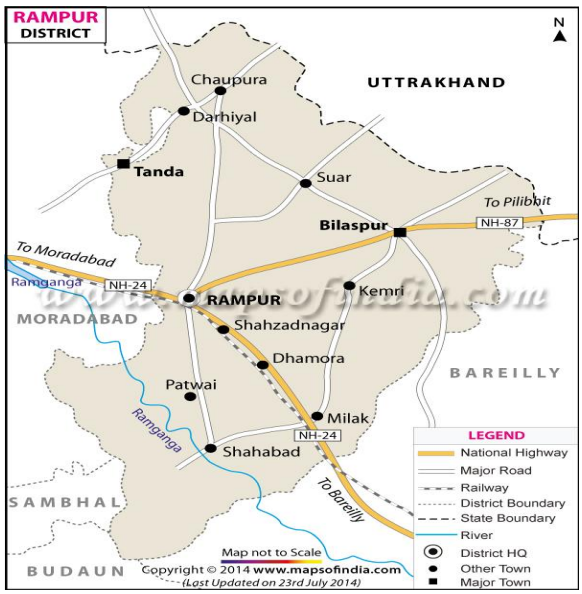
शोध तकनीकि एवं विधितन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के शोध–पत्र को पूरा करने के लिये मुख्यतः दो विधियों प्रादेशिक एवं क्रमबद्ध का यथास्थान प्रयोग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि द्वारा क्षेत्रीय विकास की अवधारणा को ध्यान में रखते हुये सूक्ष्म से सूक्ष्मतर तक विवेचना किया गया है। शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्तरों से प्राप्त सूचनाओं एवं प्रकाशित तथा अप्रकाशित आकड़ों का समुचित प्रयोग किया गया है। साथ ही सरकार द्वारा प्रकाशित आख्यायें, गजेटियर्स,पत्रिकायें,प्रकाशित लेख ग्रन्थों तथा जनपद एवं राज्य स्तर से प्राप्त आकड़ों को एवं मानचित्रण,आरेख सारणी व विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का यथासम्भव विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद रामपुर भारत के उन क्षेत्रों में से एक है जो भौगोलिक दृष्टि से हिमालय से निकलने वाली गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा युगों–युगों तक किये गये अवसादी निक्षेपण से निर्मित एक सम्प्राय मैदान है जो सम्पूर्ण मैदानी भाग भूमि की पपड़ी के अवनयन का सूचक है। जनपद का स्थिति एवं विस्तार $28^0 25' 4''$ से $29^0 10' 32''$ उत्तरी अक्षांश तक तथा $78^0 54' 40''$ से $79^0 28' 16''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद के उत्तर में ऊधमसिंह नगर पूर्व में बरेली,पश्चिम में मुरादाबाद तथा दक्षिण में बदायूं जनपद से घिरा जनपद रामपुर उत्तर प्रदेश के मानचित्र में एक दिल की आकृति के समान नजर आता है। जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल का 2367 वर्ग किमी0 जो उत्तर प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 0.98 प्रतिशत क्षेत्र आच्छादित करता है। वर्तमान प्रशासनिक स्वरूप की दृष्टि से जनपद रामपुर 6 तहसीलों (स्वार,टाण्ड़ा,बिलासपुर,रामपुर सदर, शाहबाद व मिलक) में विभक्त है। इन तहसीलों के अतिरिक्त 6 विकासखण्ड़ों,75 न्यायपंचायतें 5 नगर पालिका परिषदों 580 ग्राम पंचायत क्षेत्र प्रशासनिक स्वरूप का निर्धारण करते है।





जनसंख्या वितरण एवं वृद्धिः–

अध्ययन क्षेत्र जनपद रामपुर अपनी भौगोलिक परिस्थितियों के कारण प्राचीन काल से ही मानव स्थली का केन्द्र रहा है। जनपद सदृश कृषि प्रदान क्षेत्र है यहाँ की अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्तम्भ आज भी कृषि ही है। वर्तमान परिदृश्य में उक्त क्षेत्र में लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि ही है जो जनपद को एक सघन कृषि क्षेत्र में संकलित करता हैं। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्यात्मक आकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है सन् 1901 में जहाँ जनपद की जनसंख्या 5,46151 थी जो नवीन जनगणना 2011 में बढ़कर 2335819 हो गई। इस प्रकार विगत 110 वर्षों में जनपद रामपुर की जनसंख्या में 174.5 प्रतिशत की वढ़ोत्तरी अंकित की गई वही सन् 2011 की जनगणनानुसार जनपद में विकासखण्डवार जनसंख्या वितरण में भी काफी विभिन्नता विद्यमान है विकासखण्ड स्वार में ग्रमीण जनसंख्या 4,35859 व्यक्ति जो सर्वाधिक है वही विकासखण्ड चमरऊआ में 2,22315 व्यक्ति सबसे कम जनसंख्या प्रतिरूप को व्यक्त करते है।

जनसंख्या वृद्वि से तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष में एक निश्चित अवधि में जनसंख्या में घटित सकारात्मक अथवा नकारात्मक परिवर्तन से होता है। यह जनसंख्या की वृद्वि उस क्षेत्र के आर्थिक विकास,सामाजिक जागरूकता,सांस्कृतिक आधार,ऐतिहासिक घटनाओं एवं राजनैतिक विचारधाराओं की सूचक होती है। किसी क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में जनसंख्या वहाँ का सर्वाधिक महत्तवपूर्ण संसाधन होती है। जो वहाँ व्याप्त आधुनिक तकनीकी दक्षता,उच्च शैक्षिक स्तर तथा स्वस्थ पौष्टिक आहार की उपलब्धता आदि के कारण जनवृद्वि के प्रमुख मानक होते है। अध्ययन क्षेत्र में भी सन् 1901 से 2011 के मध्य 174.5 प्रतिशत की जो आशातीत वृद्वि हुई वह एक सकारात्मक पहलू है। उक्त क्षेत्र की सन् 1901 से 2011 तक के जनसंख्या वितरण एवं जनसंख्या वृद्वि के प्रतिरूप को तालिका संख्या 01 में दर्शाया गया है।

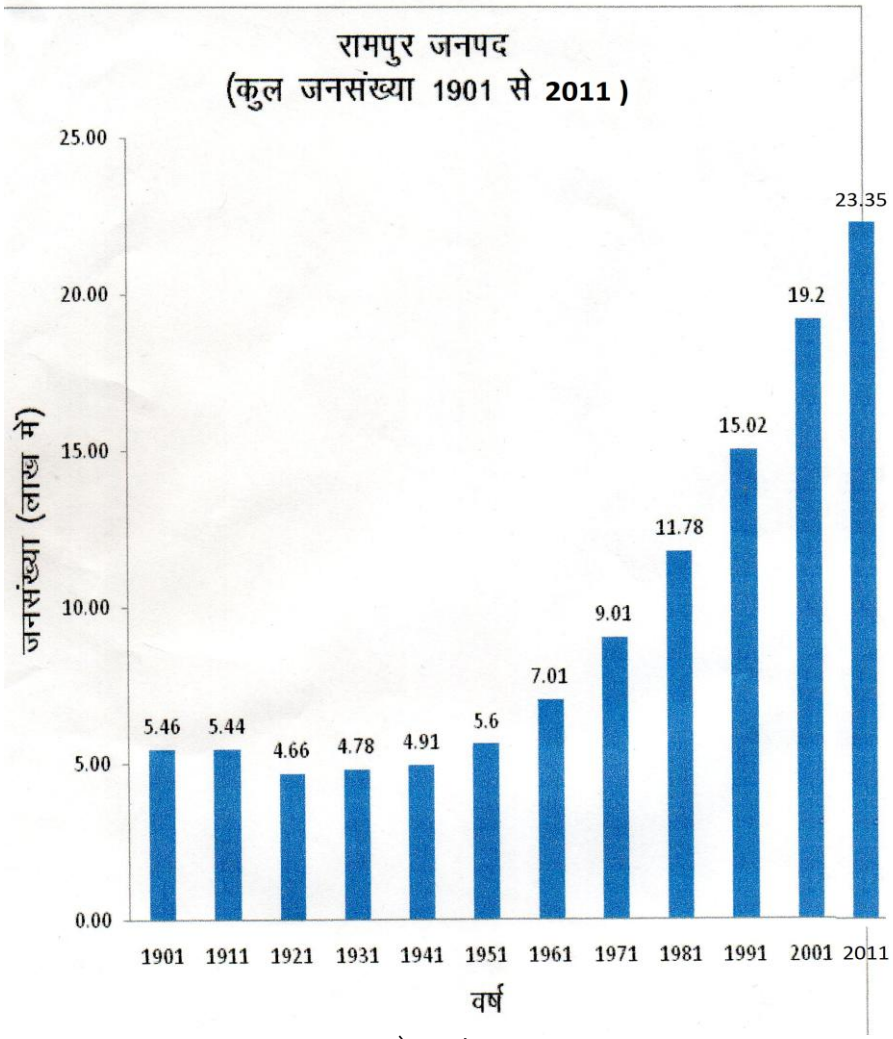
तालिका संख्या – 1

जनपद रामपुर में जनसंख्या वितरण एवं वृद्वि (1901–2011) में दशकीय परिवर्तन

वर्ष	जन्संख्या (लाखों में)	दशकीय वृद्वि (%) में	ग्रमीण	नगरीय
1901	5.46	–	–	–
1911	5.44	–	– 3.0	–
1921	4.66	4.0	–19.0	–4.0

1931	4.78	3.0	4.0	3.0
1941	4.91	3.0	4.0	3.0
1951	5.60	14.0	4.0	14.0
1961	7.01	25.0	44.0	25.0
1971	9.01	28.0	31.0	28.0
1981	11.78	31.0	19.0	31.0
1991	15.02	27.5	28.5	27.5
2001	19.23	28.0	30.1	28.0
2011	23.35	21.4	21.0	21.4
कुल	–	174.5	150.2	278.0

स्रोत :– सांख्यिकीय पत्रिका जनपद रामपुर – 2014



आरेख संख्या – 1

अध्ययन की उपरोक्त तालिका के जनसंख्यात्मक आकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वर्तमान शताब्दी के प्रथम दो दशकों में जनपद की जनसंख्या (1901–21) में 4.0 प्रतिशत की गिरावट आई है जिसका प्रत्यक्ष कारण सन् 1910 की असामान्य बाढ़,1910–11 की महमारी (प्लेग) और 1918–19 का इन्फलुएन्जा था। सन् 1941–51 के दशक में जनपद में जनसंख्या की वृद्वि 14.0 प्रतिशत,1951–61

दशक में जनपद में वृद्वि दर 25.0 प्रतिशत, 1961–71 के दशक में 28.0 प्रतिशत, 1971–81 दशक में 31. 0 प्रतिशत, 1981–91 के दशक में 27.5 प्रतिशत, 1991–2001 के दशक में 28.0 प्रतिशत जबकि 2001–2011 के दशक में 21.4 प्रतिशत जनवृद्वि अंकित की गई। वही साथ ही जनसंख्या वृद्वि दर के ग्रामीण एवं नगरीय विश्लेषण में भी काफी उतार–चढाव रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् 1951 से 2011 के दशकों में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या वृद्वि में लगातार क्रमशः 1951–61,1961–71,1971–81,1981–91,1991–2001,2001 से 2011 में क्रमशः 44.0 व 16.0 प्रतिशत, 31.0 व 21.0 प्रतिशत, 19.0 व 79.0 प्रतिशत, 28.5 व 24.6 प्रतिशत, 30.1 व 22.3 प्रतिशत, 21.0 व 17.5 प्रतिशत की जनसंख्या वृद्वि विद्यमान रही।

जनसंख्या घनत्वः–

जनसंख्या का घनत्व एक ऐसा बैरोमीटर है। जिसके द्वारा मनुष्य और भूमि के निरन्तर परिवर्तनशील सम्बन्ध की सूचना मिलती है। वास्तव में किसी क्षेत्र या प्रदेश में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या और उस क्षेत्र या प्रदेश के क्षेत्रफल के पारस्परिक अनुपात को जनसंख्या घनत्व कहा जाता है। अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान शताब्दी में जनसंख्या घनत्व के स्वरूप में लगातार उतार–चढ़ाव का स्तर आता रहता है सन् 1981–1991 के दशक में जनसंख्या घनत्व जहॉ 633 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 था वहीं सन् 2001–2011 के दशक में बढ़कर 987 व्यक्ति प्रति की किमी0 हो गया। जो कि प्रदेश के जनघनत्व 1981–91 व 2001–2011 के क्रमशः 548 व 829 से कहीं अधिक है। वही जनपद के विकासखण्ड स्तर पर भी जनसंख्या घनत्व में काफी विभिन्नता विद्यमान

तालिका संख्या – 2

जनपद रामपुर –जनसंख्या घनत्व का परिवर्तित स्वरूप(1901–2011)

वर्ष	कुल जनसंख्या	जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग किमी0)	प्रदेशीय घनत्व (प्रति वर्ग किमी0)
1901	546151	230	165
1921	466059	196	159
1941	491794	207	205
1961	701537	296	250
1981	1178621	498	377
1991	1502141	633	548
2001	1923739	813	689
2011	2335819	987	829

स्रोत :–

1 –डिस्ट्रिक्ट गजेटियर रामपुर,1974 पृ0–81

2 – सांख्यिकीय पत्रिका रामपुर–2008,2014

3 – जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1961,71,81

है सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जहॉ समस्त विकासखण्डों 758 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 जनघनत्व अंकित किया गया वहीं विकासखण्डवार जनघनत्व क्रमशः स्वार, बिलासपुर, सैदनगर, चमरऊआ, शाहाबाद व मिलक में क्रमशः 753,470,1097,1016,785 व 788 अंकित किया गया।

लिंग अनुपात :–

जनसंख्या में पुरूष स्त्री के अनुपात से जनता की शारीरिक शक्ति का अनुमान होता है। पुरूष–स्त्री अनुपात को लिंगानुपात कहते है। जिसका अभिप्राय प्रति हजार पुरूषों की संख्या पर महिलाओं की संख्या से है। अध्ययन क्षेत्र में स्वतन्त्रोपरान्त लगातार लिंगानुपात में उत्तरोत्तर वृद्धि दृ ष्टिगोचर होती है क्रमशः सन् 1981,1991, 2001 व 2011 में जहॉ लिंगानुपात क्रमशः 843,867,879 व 909 स्त्रियॉ प्रति हजार पुरूषों के पिछले विद्यमान थी वहीं विकासखण्ड स्तर पर भी सन् 2011 की जनगणनानुसार काफी विभिन्न दिखाई पड़ती है विकासखण्डवार क्रमशः–स्वार, बिलासपुर, सैदनगर,

चमरऊआ, शाहाबाद व मिलक में प्रति 1000 पुरूष पर स्त्रियों का अनुपात क्रमशः 911,907,919,902,898 व 897 अनुपात अंकित किया गया वही ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र का लिंगानुपात क्रमशः 906 एवं 917 रहा। आधुनिक परिवेश में भी प्रति 1000 पुरूषों पर दिनो दिन लिंगानुपात में कमी स्त्रियों के प्रति समाज की नकारात्मक सोच का परिणाम ही जान पड़ता है आज भी समाज में महिलाओं के प्रति जन्म से लेकर शिक्षा तक में भेद किया जाता है जो जन्म के समय कन्या भ्रूणलिंग परीक्षण का उत्तरदायी कारक है। लेकिन फिर भी महिलायें आज विषम परिस्थितियों में भी पुरूष का हर क्षेत्र में मुकावला करने में सक्षम है।

साक्षरतात्मक संरचना :–

किसी क्षेत्र के विकास के लिये जनांकिकीय अध्ययनों में साक्षरता का अध्ययन महत्वर्पूण स्थान रखता है क्योंकि क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि में शिक्षा का अपना अलग ही महत्व है। क्षेत्र का सामाजिक,आर्थिक,राजनैतिक और तकनीकी विकास भी शिक्षा के बिना अधूरा है। ''वह व्यक्ति जो किसी भाषा में समझ के साथ लिख और पढ़ सकता है, साक्षर माना गया है। वह व्यक्ति जो सिर्फ पढ़ सकता है लेकिन लिख नहीं सकता साक्षर नहीं माना गया है। साक्षर होने के लिए आवश्यक नहीं है कि सम्बन्धित व्यक्ति ने औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त की हो या कोई परिक्षा उत्तीर्ण की हो।'' साक्षरता वह सार है जिसके द्वारा सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन कर्त्तव्य एवं अधिकारों के प्रति सजगता,सामाजिक कुरीतियों का दूर करने,राष्ट्रीय एकता को बनायें रखने तथा देश के सर्वांगीण विकास में शिक्षा एवं साक्षरता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद रामपुर शैक्षित दृष्टि से देश व प्रदेश में एक पिछड़ी हुई दशा को दर्शाता है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार उक्त क्षेत्र में कुल 53.34 प्रतिशत जनसंख्या ही साक्षर है जबकि हमारे देश भारत में 74.04 प्रतिशत तथा अपने देश उ0प्र0 में साक्षरता का यह प्रतिशत 67.7 प्रतिशत रहा है। वहीं क्षेत्र की कुल साक्षरता के अतिरिक्त ग्रामीण एवं नगरीय साक्षरता में काफी असमानता क्रमशः52. 40 प्रतिशत एवं56.00 प्रतिशत विद्यमान है क्षेत्र में पिछले छह दशकों से वर्तमान तक साक्षरता का अध्ययन करें तो अध्ययन क्षेत्र में निरन्तर प्रगति दर्शनीय है। सन् 1961 में जहॉ क्षेत्र में साक्षरता का प्रतिशत 12.07 प्रतिशत था वहॉ 2011 में बढ़कर 53.34 प्रतिशत तक हो गया। इसके अतिरिक्त अन्य दशकों का विवेचन उपरोक्त तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या – 3

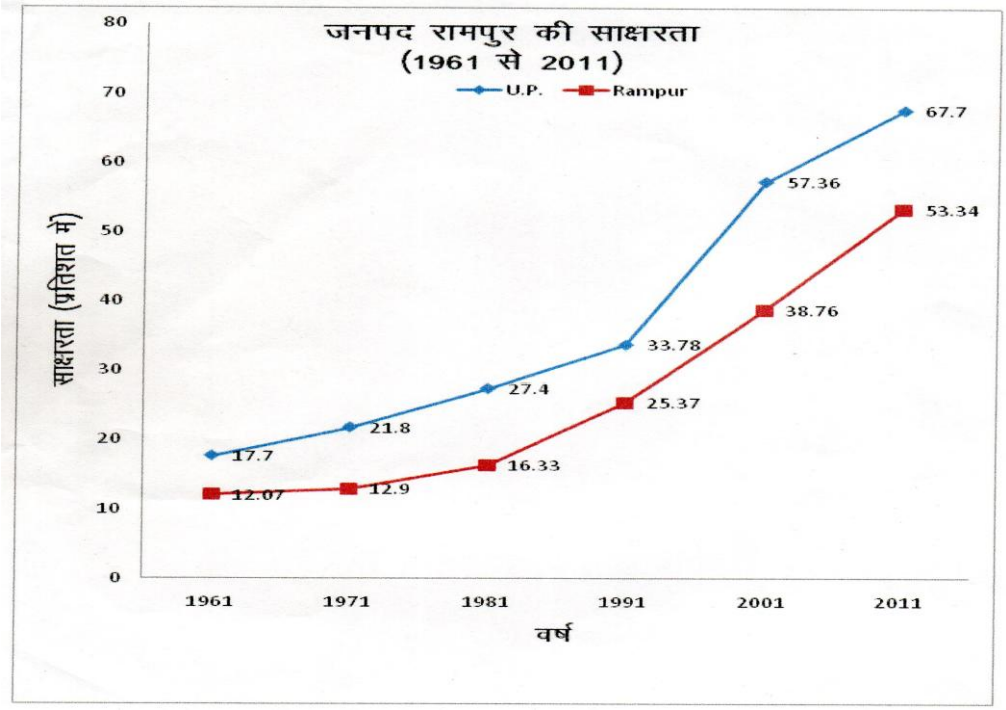
रामपुर जनपद में साक्षरता स्वरूप(1961–2011)प्रतिशत में।

वर्ष	रामपुर	उ0प्र0
1961	12.07	17.70
1971	12.90	21.80
1981	16.33	27.40
1991	25.37	33.78
2001	38.76	57.36
2011	53.34	67.70

स्रोतः–1. जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1961,71,81 रामपुर

2. सेन्सस ऑफ इण्डिया 2001,उ0प्र0 पोविजन पोपूलेशन टोपल्स 2001

3. जिला सांख्यिकीय पत्रिका 2014



आरेख संख्या – 2

निष्कर्षः–

अध्ययन के उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कुछ दशकों को छोड़कर जनपद की जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है जो सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि का एक सकारात्मक पहलू है इस जनवृद्धि का प्रमुख कारण क्षेत्र सघन कृषि प्रदान होना, साक्षरता विकास तथा ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में सुख – सुविधाओं की उपलब्धता का होना , जो क्षेत्रीय विकास का परिणाम है।

सन्दर्भ सूची :–

1. सिंह काशीनाथ तथा सिंह जगदीश–''आर्थिक भूगोल के मूल तत्व'' वसुंधरा प्रकाशन, दाउदपुर,गोरखपुर।
2. सी0 जी0 हाईपिल–वाइटल स्टेल्सिटिकर्स न्यूयार्क (1923) पृ0 10
3. डिक्ट्रिच एल0 डी0–''फ्लोरिडा स ह्यूमन रिसोर्सेज'' ज्योग्राफिकल रिव्यू ,वा 38, भाग 2,1948 पृ0 274।
4. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर रामपुर–1974 पृ0–1,81
5. लाल एच0–जनसंख्या भूगोल वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर 1986, पृ0 64।
6. सेन्सस ऑफ इण्डिया 1981, भाग–XIIIब प्राथमिक जनगणना हस्तपुस्तिका जिला रामपुर पृ0 XIV